

नाता जोड़ने आया है 4. किसी प्रकार का लग्नव या संबंध।

नाताकृत वि. (फा.) शक्तिहीन, निर्बल, कमजोर

नाताकृती स्त्री. (फा.) शक्तिहीनता, निर्बलता, कमजोरी।

नाता-गोता पुं. (फा.) वंश और गोत्र की समानता के कारण होने वाला एक आपस का संबंध।

नातिक्रा पुं. (अर.) 1. बोलने की शक्ति, वाक् शक्ति 2. वाणी।

नातिन स्त्री. (तद्.) पुत्री की पुत्री, दौहित्री, धेवती।

नातिनी स्त्री. (तद्.) दे. नातिन।

नाती पुं. (तद्.) पुत्री का पुत्र, दौहित्र, धेवता।

नाते क्रि.वि. (तद्.) 1. संबंध से 2. हेतु, लिए, वास्ते प्रयो. तुम यहाँ किस नाते आते हो?

नातेदार वि. (तद्.) जिससे कोई नाता हो, रिश्तेदार, संबंधी

नातेदारी स्त्री. (तद्.) रिश्तेदारी, संबंध।

नात्र पुं. (तत्.) शिव, महादेव, शंभु।

नाथ पुं. (तत्.) 1. प्रभु, स्वामी, मालिक, भगवान् उदा. 'नाथ नील नल कपि दोउ भाई -तुलसी, रामचरितमानस, सुंदरकांड 2. पति 3. शिव, महादेव, शंभु 4. गोरखपंथी साधुओं का संप्रदाय जो प्रायः अपने नाम के अंत में 'नाथ' शब्द का प्रयोग करता है, स्त्री. 1. बैल आदि के नाक में पहनाए जाने वाली रस्सी 2. नाक में पहनने का एक आभूषण या गहना, नथ उदा. 'परी नाथ कोई छुड़अ ना पारा। मारग मानुस सोन उछारा' -जायसी, पद्मावत, 5/4।

नाथता स्त्री. (तत्.) नाथ होने की अवस्था या भाव, नाथत्व

नाथत्व पुं. (तत्.) दे. नाथता।

नाथद्वारा पु. (तत्.) वल्लभ संप्रदाय से संबंधित वैष्णवों का एक प्रसिद्ध तीर्थ जहाँ श्रीनाथ जी की मूर्ति स्थापित है।

नाथना स.क्रि. (तद्.) 1. बैल और ऊँट की नाक को छेदकर उसे नाथना, नत्थी करना 2. रस्सी द्वारा उनके नाक को छेदकर पशुओं को नियंत्रित करना 3. एक सूत्र में बांधना 4. वश में करना।

नाथपंथ पुं. (तत्.) 1. गुरु गौरखनाथ तथा उनके शिष्यों द्वारा स्थापित एक संप्रदाय, ये मूलतः निर्गुण शिव के उपासक हैं, इनकी संख्या सामान्यतः नौ मानी जाती है इस पंथ की बारह शाखाएँ हैं-सत्यनाथी, धर्मनाथी, रामपंथ, नटेश्वरी, कन्हण, कपिलानी, वैरागी, माननाथी, आईपंथ, पागलपंथ, धजपंथ और गंगानाथी।

नाथपंथी पुं. (तत्.) नाथपंथ में दीक्षित या मानने वाला।

नाथवान वि. (तत्.) 1. जिसका कोई स्वामी या रक्षक हो, सनाथ 2. सेवक 3. पराधीन, परतंत्र, जो स्वतंत्र न हो।

नाथहरि पुं. (तत्.) पशु, जानवर।

नाथोक्त वि. (तत्.) शिव, मालिक या ईश्वर द्वारा कथित।

नाद पुं. (तत्.) 1. शब्द, ध्वनि, आवाज 2. अव्यक्त शब्द 3. वर्णों का एक अव्यक्त रूप 4. हठयोग के अनुसार अंतरात्मा में होती रहने वाली एक सूक्ष्म ध्वनि या शब्द जो एकाग्र मन से अभ्यास करने पर सुनाई देती है, मान्यतानुसार उसे सुनते रहने से चित्त अंत में नाद रूपी ब्रह्म में लीन हो जाता है 5. भाषा. वर्णों के उच्चारण में होने वाला एक विशेष प्रकार का प्रयत्न जिसमें कंठ से वायु का स्वर निकालने के लिए न तो बहुत फैलाना पड़ता है और न ही सिकोड़ना 6. गाना, बजाना, संगीत।

नादन स्त्री. (तत्.) नाद करना या गरजना।

नादना अ.क्रि. (तत्.) 1. ध्वनि या शब्द होना 2. बजना 3. गरजना, शोर मचाना या चिल्लाना 3. दीए की लौ का हवा बार-बार आने से हिलना 4. हँसी-खुशी में उधर-उधर हिलना या घूमना 5. लहराना।